सहारनपुर में 300 मीटर, लेकिन गाजियाबाद में 30 मीटर ही रह गई हरनंदी की चौड़ाई

हाल ए हरनंदी

नदी में डाला जा रहा है प्रदूषित जल, अल्गर ब्लूम की मौजूदगी से कम हो रही आक्सीजन, गौतमबुद्ध नगर में दो दिन तक होगा सर्वे

जासं, गाजियाबाद: विलुप्त होने की कगार पर पहुंच गई हरनंदी नदी को नवजीवन देने के लिए रविवार को आइआइटी कानपुर की सी- गंगा शोध टीम ने सर्वे किया। पता चला कि शिवालिक की पहाड़ियों से निकलने के बाद हरनंदी की चौड़ाई 300 मीटर है लेकिन गाजियाबाद में यह घटकर महज 30 मीटर चौड़ी रह गई है। हरनंदी के ऊपर अतिक्रमण किया गया है, इसके सूखे हिस्से पर ग्रामीण क्षेत्र में खेती हो रही है तो शहरी क्षेत्र में पक्का निर्माण कर लिया गया है।

कानपुर सी- गंगा के शोध सहायक और सर्वे टीम के प्रभारी प्रीत तिवारी ने बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार ने विलुप्त होने वाली 61 नदियों पर मनरेगा के माध्यम से काम कराने का फैसला लिया है। तकनीकी मदद के लिए सरकार ने आइआइटी कानपुर सी- गंगा की टीम को चुना है। सी- गंगा के लीडर प्रोफेसर विनोद तारे है, उनकी टीम में एनआइएच रुड़की, बीबीएयू लखनऊ और आइआइटी बीएचयू के शोधकर्ता शामिल हैं। प्रीत तिवारी ने बताया कि रविवार को गाजियाबाद में सिरौरा सलेमपुर, मुर्तजाबाद भूपखेड़ी, हरनंदी नदी के घाट के पास टीम में शामिल सुरेंद्र कुमार और सिंचाई विभाग के अधिकारियों के साथ सर्वे किया। टीम अगले दो दिन गौतमबुद्ध नगर में हरनंदी का सर्वे करेगी। दो माह में सहारनपुर से गौतमबुद्ध नगर तक सर्वे के दौरान मिली जानकारी की रिपोर्ट तैयार होगी।

हरनंदी में मिला अल्गर ब्लूम : प्रीत तिवारी ने बताया कि हरनंदी में कैला भट्ठा से जा रहे नाले का पानी सीधा प्रवाहित किया जाता है, इसमें इंडस्ट्रियल वेस्ट भी मिला होता है। नदी में अल्गर ब्लूम उत्पन्न हो गए हैं, जिनकी वजह से नदी में घुलित आक्सीजन कम होती है।

हरनंदी में जा रहा दूषित पानी ● जागरण

दैनिक जागरण ने चलाया है सफाई के लिए अभियान

हरनंदी की सफाई के लिए दैनिक जागरण ने अभियान चलाया है। हाल ही में दैनिक जागरण के अभियान से जुड़कर शहरवासियों ने प्रदेश सरकार से नदी की सफाई की मांग की थी, इसके लिए जिलाधिकारी के माध्यम से मुख्यमंत्री को ज्ञापन भी प्रेषित किया गया है।